ISSN : 2320-7604
RNI NO. : DELHIN/2008/27588
UGC Care Approved Research journal
October, 21, Part 1, Serial.No. 143

त्रैमासिक

बहुरि नहिं आवना

अंक-26
जनवरी, 2024 - मार्च, 2024
मूल्य : 200 रुपए

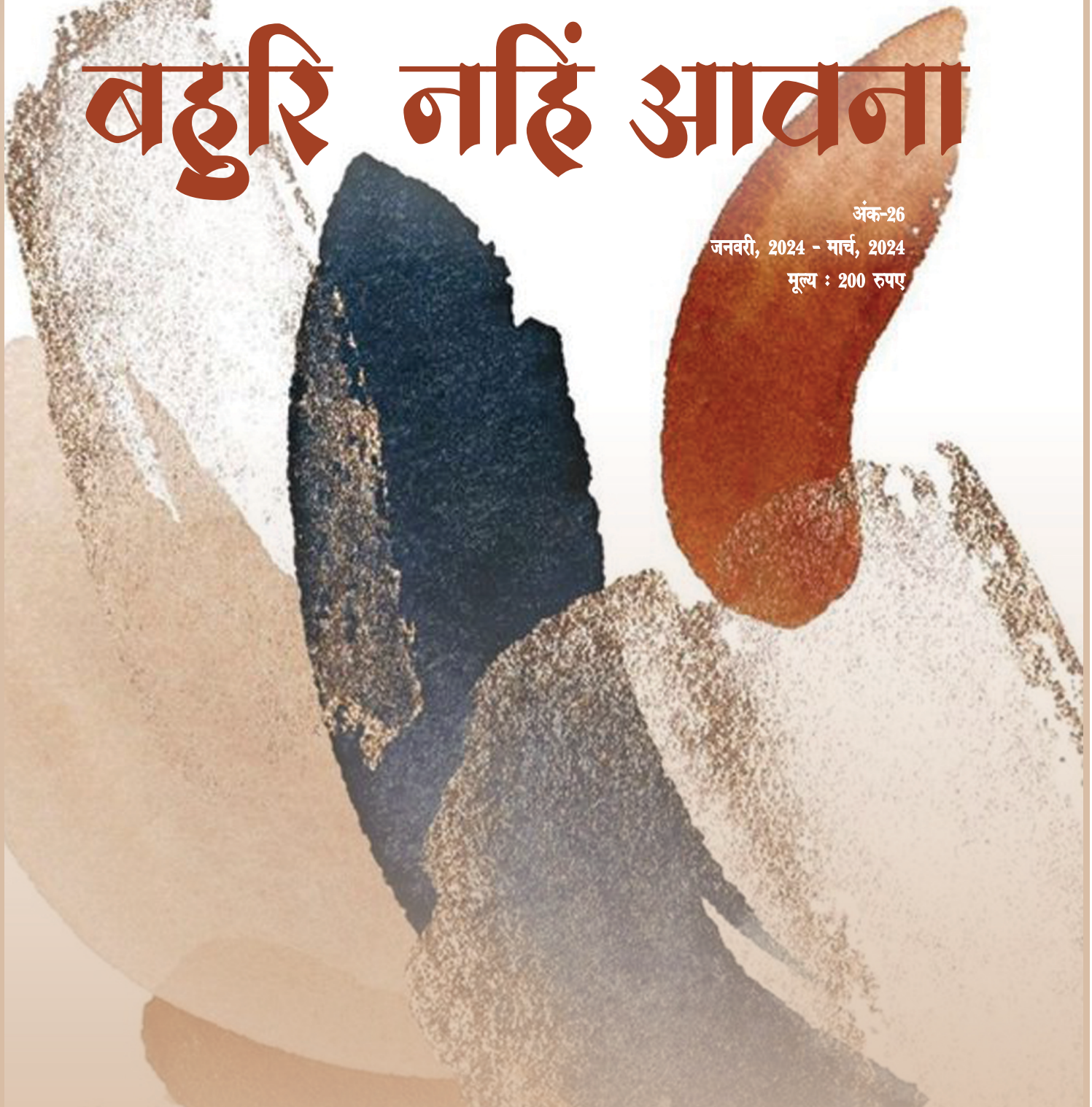

आजीवक महासंघ ट्रस्ट द्वारा निर्गत

संस्कृति, धर्म, दर्शन और साहित्य

प्रधान संपादक
प्रो. श्यौराज सिंह 'बेचैन'
संपादक
प्रो. दिनेश राम
सहायक संपादक
डा. अनिरुद्ध कुमार 'सुधांशु'
तान्या लाम्बा
भाषा सहयोग
डा. हेमंत कुमार 'हिमांशु'
डा. राजकुमार राजन
कानूनी सलाहकार
एड. सतपाल विर्दी
एड. संदीप दहिया

संपादकीय सलाहकार एवं विषय विशेषज्ञ
डा. वी. पी. सिंह, प्रो. राजेन्द्र बड़गूजर, बलवीर माधोपुरी, प्रो. फूलबदन, प्रो. नामदेव, प्रो. सुजीत कुमार, डा. चन्देश्वर, डा. दीनानाथ, डा. मोहन चावड़ा, विजय सौदायी, डा. यशवंत वीरोदय, डा. सुरेश कुमार, डा. मनोज दहिया
अप्रवासी समाज, संस्कृति और साहित्य के विशेषज्ञ
ओमप्रकाश वाघा, नरेन्द्र खेड़ा, राम बाबू गौतम, डा. गुलशन नजरोवना जुगुरोवा, डॉ. बयात रहमातोव, डा. सिराजुद्दीन नूरमातोव

वर्ष : 16
अंक : 26
अंक : जनवरी, 2024 - मार्च, 2024
संस्थाओं के लिए प्रति कापी : 100 रुपए
वार्षिक सदस्यता शुल्क : 3000 रुपए
आजीवन सदस्यता : 10000 रुपए

संपादकीय पता
जे-5, यमुना अपार्टमेंट,
होली चौक, देवली,
नई दिल्ली-110080
मोबाइल : 09868701556
Email: bahurinahiawana14@gmail.com
Website-www.bahurinahiawana.in

Advertisement Rate
Full Page Rs. 20,000/-
Half Page Rs. 10,000/-
Qtr. Page Rs. 5,000/-
Back Cover Rs. 40,000/- (four colour)
Inside Front Rs.35,000/- (four colour)
Inside Back Rs. 35,000/- (four colour)

Mechanical Data
Overall Size 27.5 cms x 21.5 cms
Full Pages Print Area 24 cms x 18 cms
Half Page 12 cms x 18 cms or
24 cms x 9 cms
Qtr Page12 cms x 9 cms

*पत्रिका पूरी तरह अवैतनिक और अव्यावसायिक है।
*पत्रिका से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।
*अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है।
*'बहुरि नहिं आवना' के सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट 'बहुरि नहिं आवना' के नाम से स्वीकृत किये जायेंगे।
*स्वामी, संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक प्रो. दिनेश राम की ओर से भारत ग्राफिक्स, सी-83, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-20 द्वारा मुद्रित एवं एफ-345, लाडो सराय, नई दिल्ली–30 से प्रकाशित।
*'बहुरि नहिं आवना' में प्रकाशित लेखों में आये विचार लेखकों के अपने हैं जिन से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

48. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति का संवर्धन	*–डॉ. हरेन्द्र कुमार* *–डॉ. हरिन्द्र कुमार*	180
49. अनामिका के उपन्यासों में चित्रित स्त्री	*–प्रियंका सरोज*	184
50. कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित पितृसत्तात्मक समाज	*–डा. हरीश कुमार* *–पूजा सरोज*	187
51. तत्सम : जिजीविषा की विजयगाथा	*–डॉ. ममता चावला*	191
52. वर्तमान समय के हिन्दी साहित्य में महिलाओं के योगदान का एक अध्ययन	*–डॉ. नवीन कुमार*	194
53. केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में लोकचेतना की अभिव्यक्ति	*–डॉ. धनंजय कुमार*	197
54. संघर्षों का रथी	*–नीतू गुप्ता*	199
55. 'बाकी सब खैरियत है' में स्त्री स्वत्व के विविध रूप एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	*–षमीना. टी* *–डा. शोभना कोक्काडन*	202
56. आधुनिक हिंदी गीतिकाव्य परम्परा : नीरज का प्रदेय	*–शिवम गिरि*	206
57. पाश्चात्य मान्यताएँ एवं नई कविता	*–शिवा अग्निहोत्री*	210
58. डिजिटल दुनिया में लघु समाचार पत्र लखनऊ में रुझान, चुनौतियां और रणनीतियाँ	*–माधुरी तिवारी* *–डा. मिली सिंह*	212
59. विश्वविद्यालय के छात्रों की धारणाओं और सामाजिक अंतःक्रियाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव : सीखने और शिक्षा पर प्रभाव	*शैलेन्द्र सिंह बिष्ट* *–डा. मिली सिंह*	218
60. जीवन की सार्थकता के मौलिक प्रश्नों को विश्लेषित करता 'अंतिम अरण्य'	*–डॉ. संगीता कुमारी*	223
61. उपभोक्तावादी संस्कृति का वर्तमान समाज पर प्रभाव संदर्भ'रेहन पर रग्घू'	*–डॉ. मनीष चौधरी*	226
62. लांगुरिया का लोकचिंतन	*–डा. महेश कुमार चौधरी*	229
63. डॉ. भीमराव अंबेडकर : सामाजिक जनतंत्र, स्वतंत्रता, समानता एवं समान नागरिक संहिता की पहल	*–डॉ. रणजीत कुमार*	232
64. भारतीय साहित्य की कहानियाँ और विभाजन की त्रासदी	*–डॉ. विन्ध्याचल मिश्रा*	235
65. वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी की प्रासंगिकता का अध्ययन	*–माया सोनकर*	239
66. भारतीय प्रवासी : स्वदेश एवं विश्व के सन्दर्भ में इनका योगदान	*–डॉ. हिमांशु यादव*	243
67. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद के ललित निबंधों में भारतीय संस्कृति के तत्त्व	*–डॉ. गीता अस्थाना* *–रूबी सिंह*	248
68. आदिवासी कविता में प्रस्तुत प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण	*–डॉ. अमित कुमार भारती*	252
69. हिंदी कहानी के पटल पर विभाजन की दास्तां	*–डॉ अनुपम कुमार*	257
70. भारतीयता की अवधारणा और साहित्य	*–डॉ. राजकुमार राजन*	260
71. पुस्तक समीक्षा : पत्रकारिता में प्रतिक्रिया भाग-1	*–डॉ. संजीव कुमार गौतम*	262
72. उनतीसवाँ देवीशंकर अवस्थी सम्मान निशान्त को	*–डॉ. कमलेश अवस्थी*	26

तत्सम : जिजीविषा की विजयगाथा

—डॉ. ममता चावला

राजी सेठ आधुनिक हिंदी साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण लेखिका के रूप में जानी जाती हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाने में सफलता प्राप्त की है। उन्होंने कहानी, उपन्यास, कविता, निबंध, अनुवाद सभी प्रकार की रचनाओं के द्वारा मानव समाज और उसके जीवन से जुड़ी हुई विभिन्न प्रकार की समस्याओं का चित्रण करने का प्रयास किया है। किसी भी साहित्यकार को उसकी रचनाओं के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है क्योंकि उसकी अनुभवी सोच ही कहीं न कहीं उसकी रचनाओं में अभिव्यक्त होती नजर आती है। राजी सेठ ने अपनी साहित्य यात्रा में, सामाजिक अवसाद के विभिन्न कारणों, आधुनिक जीवन की टूटन, तनाव, संत्रास और द्वंद्व को, जीवन के प्रति उपजी कड़वाहट को, पहचान कर उसे अपने साहित्य में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। उनके साहित्य में सामाजिक समस्याओं का बड़ी सूक्ष्मता के साथ अंकन किया गया है। सामाजिक परिस्थितियों का मानव मन पर प्रभाव, तो बहुत ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने परिस्थितियों के आलोक में मानव मन की गुत्थियों, उसकी उलझनों को समझने और समझाने की एक कोशिश की है।

राजी सेठ किसी विशेष प्रकार की विचारधारा से प्रभावित हुई नहीं लगती। वे साहित्य को सबके हित के साथ जोड़ती हैं। वे साहित्य को जनतांत्रिक मानती हैं जहाँ अन्याय, विषमता, शोषण कुसंस्कारों, कुशिक्षाओं का सदैव विरोध होता है और मानव कल्याण की भावना सर्वदा एकमात्र लक्ष्य के रूप में स्वीकार की जाती है।[1] नारी जीवन से जुड़े विभिन्न समस्याओं पर भी राजी निरंतर लिखती आयी हैं। औरत को सिर्फ कमजोर या उसकी सामाजिक आकृति को यथावत लेना, राजी सेठ को कभी भी गवारा नहीं रहा। वे स्त्री को पुरुष के मुकाबले ज्यादा मेहनती, ज्यादा व्यवहार कुशल और ज्यादा लचीली मानती हैं इसीलिए वे पुरुष से ज्यादा उत्तरदायित्व को निभाने की क्षमता रखती है। नारी की सामाजिक स्थिति के लिए जो भी कारण, शक्तियाँ या मूल्य जिम्मेदार हैं वे सभी, कभी न कभी, उपस्थित रही सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक दशाओं के कारण ही रूप ग्रहण करते रहे हैं। परिस्थितियाँ परिवर्तित हुईं, पर नारी की दशा उसी अनुरूप परिवर्तित नहीं हो पाई। ऐसे में नारी जीवन में कुंठा एवं संत्रास का होना स्वभाविक ही कहा जाएगा। अपने जीवन की इन सभी समस्याओं से लड़ने के लिए नारी शक्ति को जिस शस्त्र का सबसे अधिक साथ मिला, वह थी उसकी शिक्षा। शिक्षा ने ही उसे आत्मबल और संकल्प लेने का बल बख्शा। वह अपने अस्तित्त्व के प्रति सचेत हुई। उसने भी अपनी जिजीविषा की पहचान करना सीखा। प्रभाकर श्रोत्रिय राजी सेठ की नारी संबंधी धारणाओं को व्यक्त करते हुए लिखते हैं—'पुरुष स्पर्द्धी आधुनिक स्त्री की तरह, राजी अपने नैसर्गिक रूप में उसकी शक्ति और संभावना, उसके सत्य और अनुभव, उसकी नियति और उत्कटता का वह सर्जनात्मक उपयोग करती है। राजी ने स्त्री के भीतर पराजित पुरुष को, बल्कि व्यवस्था को जितनी भंगिमाओं से उकेरा है और अपनी विधात्मक दृष्टि से जो मूल्यवत्ता अर्जित की है उससे नए-नए अर्थ प्रकट हुए हैं। वे ऐसी महिलावादी नहीं है जिन्हें पुरुष नकारात्मक उपस्थिति लगता है। वह स्त्री की खोट भी पहचानने की कोशिश करती हैं और भरसक निरपेक्ष बनी रहकर अधिक विश्वसनीय होती हैं।[2]

राजी सेठ ने अपने साहित्य के माध्यम से इस विचार का पुरजोर समर्थन किया है कि जीवन की समस्या को सबसे पहले खुद समझने की कोशिश की जाए और फिर अपने संकल्प आत्मबल, एवं आत्मविश्वास के साथ उसे सुलझाने की कोशिश की जाए। वह अपने हक की लड़ाई खुद लड़ने की समर्थक हैं। तत-सम राजी सेठ का एक बहुचर्चित उपन्यास है जिसके लिए उन्हें भारतीय भाषा परिषद् का पुरस्कार (1985) एवं 'श्री अनंत गोपाल शेवाड़े' 'हिंदी कथा साहित्य पुरस्कार' प्रदान किया गया। तत-सम एक समाजिक उपन्यास है जिसमें संस्कारों और परंपराओं के बीच अपनी अस्मिता के लिए स्थान ढूंढती स्त्री का चित्रण किया गया है। उपन्यास का कथानक, परिस्थितियों से आगे, जिजीविषा की तलाश करता दिखाई देता है। उपन्यास में लेखिका जीवन के दस्तूर, समाज की स्त्री-पुरुष का स्थान, जीवन की जड़ता, पुनर्विवाह, भारतीय संस्कृति के विकृत स्वरूप और जीवन को जड़ बना देने वाले कारणों पर विचार करने के लिए मजबूर करती है।

कहानी की नायिका वसुधा एक शिक्षित विधवा है जिसके पति निखिल का देहांत एक कार एक्सीडेंट में हो गया है। वह अपनी ही स्थिति से घबराई हुई है। वह अपने मायके में अपनी माँ और भैया भाभी के साथ रह रही है। वसुधा